पद ११६

(राग: कानडा जिल्हा - ताल: त्रिताल)

तुम्हि जोडा सखा गुरुराया।।२।। म्हणे माणिक निज राम पहावा।

तयालागीं हृदयींच जपावा।।३।।

- राम होउनि राम गारे। रामासी शरण रिघा रे।।ध्रु.।। कोण कैंचा हें

- विचारा। नका कर्म करूं व्यभिचारा।।१।। हा दुस्तर भव हराया।